For U.G-II (Hons.)
Paper-IV

FRENCH REVOLUTION : CAUSES

फ्रांस की क्रांति पुरातन व्यवस्था के खिलाफ आधुनिक, नवयुगी चेतना का विद्रोह है। पुनर्जागरण एवं उसके बाद उत्पन्न प्रबोधन की विचारधारा का पहला व्यावहारिक परीक्षण कुछ सीमित अर्थों में अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में हुआ था किंतु फ्रांसीसी क्रांति प्रबोधन की चेतना का विस्फोट था। वास्तव में यह प्रबोधन की विचारधारा ही थी जिसने फ्रांसीसी निरंकुश शासन एवं दोषपूर्ण सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के खिलाफ क्रांति-चेतना निर्मित की एवं काफी हद तक उसे स्वरूप भी दिया।

फ्रांस में क्रांति का महत्व इस बात से लगाया जा सकता है कि क्रांतिपूर्व एवं पश्चात् की अवस्थाओं के लिए क्रमशः 'पुरातन' एवं आधुनिक व्यवस्था का प्रयोग होने लगा। पुरातन व्यवस्था भ्रष्ट, अक्षम, अव्यवस्थित तथा खर्चीली थी। फ्रांस में निरंकुश राजतंत्र था जो राजा के दैवी सिद्धांत पर आधारित था। इसमें राजा को असीमित अधिकार प्राप्त थे और राजा स्वेच्छाचारी था। लुई 14वें के शासनकाल में (1643-1715) निरंकुशता अपनी पराकाष्ठा पर थी। उसने कहा कि "मैं ही राज्य हूँ"। वह अपनी इच्छानुसार कानून बनाता तथा शक्ति का केन्द्रीकरण राजतंत्र के पक्ष में कर दिया। लुई 15वाँ (1715-1774) अत्यंत विलासी, अदूरदर्शी और निष्क्रिय शासक था। आस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध एवं सप्तवर्षीय युद्ध में भाग लेकर देश की आर्थिक स्थिति को भारी क्षति पहुँचाई। उसने कहा कि "मेरे बाद प्रलय होगी"। क्रांति के समय लुई 16वाँ (1774-93) शासक था, वह भी अकर्मण्य, अयोग्य, स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश शासक था जिसपर मेरी एन्टोनियट का प्रभाव था। कुल मिलाकर देखा जाये तो फ्रांस में भ्रष्ट, निरंकुश निष्क्रिय एवं शोषणकारी व्यवस्था मौजूद थी। शासन में जनता की भागीदारी नहीं थी, जनसाधारण का स्टेट्स जनरल में प्रतिनिधित्व था लेकिन 1614 के बाद उसकी बैठक कभी बुलाई ही नहीं गई। फ्रांस की मौजूदा अराजकपूर्ण स्थिति के बारे में यूँ कहा जा सकता है कि "बुरी व्यवस्था का तो कोई प्रश्न नहीं, कोई व्यवस्था ही नहीं थी।"

फ्रांसीसी समाज विषम तथा विघटित था।

Scanned with CamScanner

यह समाज पूरे तरीके से विशेषाधिकार एवं विशेषाधिकार विहीन वर्गों में विभक्त था। फ्रांसीसी समाज तीन वर्गों में विभक्त था। प्रथम स्टेट्स में पादरी वर्ग, द्वितीय स्टेट्स में कुलीन वर्ग एवं तीसरे स्टेट्स में जनसाधारण शामिल था। प्रथम एवं द्वितीय स्टेट्स को विशेषाधिकार प्राप्त था जबकि तृतीय स्टेट्स अधिकार विहीन थे।

(a) प्रथम स्टेट : पादरी वर्ग दो भागों में विभक्त थे - उच्च एवं निम्न। उच्च पादरी वर्ग के पास अपार धन था। वे 'टाइथ' नामक कर वसूलते थे। देश की जमीन का पांचवाँ भाग चर्च के पास था तथा पादरी वर्ग चर्च की अपार सम्पदा का प्रयोग विलासपूर्ण जीवन में करते थे। ये सभी प्रकार के करों से मुक्त थे। धार्मिक कार्यों में इनकी रुचि नहीं थी। दूसरा वर्ग साधारण पादरियों का था जो सरल जीवन जीते तथा धार्मिक कार्यों को सम्पादित करते थे। ये उच्च पादरी वर्ग से घृणा करते थे तथा जनसाधारण से अपनी सहानुभूति रखते।

(b) द्वितीय स्टेट : कुलीन वर्ग इसमें शामिल था तथा सेना, चर्च न्यायालय आदि महत्वपूर्ण विभागों में इनकी नियुक्ति की जाती थी। ये किसानों से विभिन्न प्रकार के कर वसूलते थे और शोषण करते थे। अपनी विशिष्ट स्थिति के कारण कुलीन वर्ग के सदस्य करों से मुक्त थे।

(c) तृतीय स्टेट : इसमें शामिल लोग जनसाधारण वर्ग थे जिन्हें कोई विशेषाधिकार प्राप्त नहीं था। वास्तव में प्रथम स्टेट एवं द्वितीय स्टेट की विलासिता एवं समृद्धि इन्हीं पर टिकी थी। इनमें किसान, मजदूर, शिल्पी, व्यापारी और बुद्धिजीवी लोग शामिल थे। ये करदाता वर्ग था। इस वर्ग में भी भारी असमानता थी तथा इन सभी वर्गों की अपनी-अपनी समस्याएँ भी मौजूद थीं। किसानों की संख्या सर्वाधिक थी और इनकी दशा निम्न एवं शोचनीय थी। किसानों को राज्य, चर्च तथा जमींदार को अनेक प्रकार के कर देने पड़ते थे एवं सामंती अत्याचार सहन करना पड़ता था। मध्य वर्ग में साहूकार, व्यापारी, शिक्षक, डॉक्टर, लेखक, कलाकार आदि शामिल थे। इनकी आर्थिक दशा यद्यपि किसानों से अच्छी थी किंतु इन्हें कोई राजनीतिक अधिकार प्राप्त न था एवं पादरी तथा कुलीन वर्ग का व्यवहार इनके प्रति अच्छा न था। फ्रांसीसी क्रांति में इनका महत्वपूर्ण योगदान था। वस्तुतः फ्रांसीसी क्रांति एक अर्थ

Scanned with CamScanner

में इस वर्ग द्वारा समानता के माँग से ही विकसित हुई।

फ्रांसीसी सरकार आर्थिक दिवालियेपन के कगार पर थी। वस्तुतः फ्रांस के राजाओं की फिजूलखर्ची तथा लुई 14वें के लगातार युद्धों के कारण राजकोष खाली हो गया। उसके बाद लुई 15वें ने आस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध एवं सप्तवर्षीय युद्ध में भाग लिया। लुई 16वें ने अमेरिकी स्वतन्त्रता युद्ध में भाग लेकर फ्रांस की आर्थिक दशा को जर्जर बना दिया। इसके अलावे राजपरिवार तथा कुलीन वर्ग अपने ऐशो-आराम तथा विलासी जीवन पर बेतहाशा खर्च किये जा रहे थे। दूसरी तरफ फ्रांस की कर-प्रणाली दोषपूर्ण थी। विशेषाधिकारों के कारण सक्षम वर्ग (पादरी एवं कुलीन) किसी भी प्रकार का कर राज्य को नहीं दे रहे थे तथा गरीब किसान जो आर्थिक दृष्टि से विपन्न था एकमात्र करदाता था। इस तरह फ्रांस में राजकोष की स्थिति दयनीय हो गई। सरकार फ्रांस में आय के अनुसार व्यय करने के बजाये व्यय के अनुसार आय को निश्चित करती थी।

इन विषम राजनीतिक- सामाजिक- आर्थिक परिस्थितियों को क्रांति चेतना में ढलने में निश्चय ही प्रबोधन की विचारधारा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समय सक्रिय वाल्टेयर, मॉण्टेस्क्यू, दिदरो तथा रूसो जैसे प्रबोधन-दार्शनिकों ने ही अहसास दिलाया कि वर्तमान व्यवस्था शोषणकारी है और इसे बदलना आवश्यक है। यही नहीं, उन्होंने अपने विचारों से क्रांति के बाद की व्यवस्था के स्वरूप को भी परिभाषित किया। मॉण्टेस्क्यू (1689-1755 ई.) का 'शक्ति पृथक्करण' का सिद्धांत केन्द्रीकृत निरंकुश राजशाही पर एक प्रहार था। इसने राजा के दैवी अधिकारों के सिद्धांत का खंडन किया तथा कार्यपालिका, न्यायपालिका और व्यवस्थापिका को एक ही व्यक्ति अर्थात् राजा में केन्द्रित रखने के बजाये अलग-अलग हाथों में रखने की सलाह दी। वाल्टेयर ने अपने लेखनी के माध्यम से फ्रांस की तत्कालीन बुराइयों को सामने लाया। उसने कहा कि – कुख्यात एवं बदनाम चीज को कुचल दो। वह इंग्लैंड के संवैधानिक राजतंत्र के अनुरूप ही फ्रांस में व्यवस्था कायम करना चाहता था। रूसो ने राज्य के 'सामाजिक अनुबंध' पर टिके होने एवं 'सामान्य इच्छा" के शासन की वकालत की। उसने अपनी लेखनी से

Scanned with CamScanner

"प्राकृतिक स्वतंत्रता" की चेतना लोगों में भर दी। इस प्रकार इन दार्शनिकों को इस बात का श्रेय दिया जा सकता है कि उन्होंने फ्रांस में क्रांति के पर्यावरण को अनुभव किया एवं उसे निर्मित किया।

फ्रांस के तत्कालीन शासक की अदूरदर्शिता एवं आर्थिक कठिनाइयाँ क्रांति का तात्कालिक कारण बनी। सरकार की शोचनीय आर्थिक कुव्यवस्था में सुधार के लिए लुई 16वें ने एक-एक करके तुर्गो, नेकर ब्रियां जैसे वित्त सलाहकारों के माध्यम से वित्तीय संकट को दूर करने का प्रयास किया किंतु विफलता हाथ लगी। ब्रियां ने राजा को सभी से एकसमान कर लेने तथा स्टाम्प टैक्स लगाने की वकालत की। विशिष्ट व्यक्तियों की सभा इसपर राजी नहीं हुई उल्टे उसने राजा के कर लगाने के अधिकार को ही चुनौती दे डाला। फ्रांस में कर लगाने का अधिकार एस्टेट्स जनरल को ही था इस लिहाज से उसकी बैठक अनिवार्य हो गयी। इसमें तृतीय सदन ने कुछ लाभ उठाने की कोशिश की। राजा एवं कुलीन वर्ग के बीच छिड़े इस संघर्ष में राजा तृतीय एस्टेट के पक्ष में थोड़ा झुका भी और थर्ड एस्टेट को विश्वास हो गया कि एस्टेट्स जनरल की बैठक साथ होगी तथा उसके सदस्यों की संख्या दुगनी होगी। थर्ड ऐस्टेट के प्रतिनिधियों का चुनाव इस प्रकार हुआ कि फ्रांस का राजनीतिकरण हो गया। यही कारण है कि जब बैठक अलग-अलग बुलाने की राजा ने घोषणा की तो थर्ड एस्टेट के सदस्य विरोध में उतर आये। यह फ्रांसीसी क्रांति की शुरुआत थी। [5 May 1789]

Scanned with CamScanner